"क्रिया"

• इकि गावत रहे मनि साद न पाई । हउमै विचि गावहि बिरथा जाई । गावणि गावहि जिन नाम पिआर । साची बाणी सबद वीचार ।1।

अर्थ:- कई मनुष्य ऐसे हैं जो भक्ति के गीत गाते तो रहते हैं पर उनके मन में कोई आनंद पैदा नहीं होता क्योंकि वे अपने भक्त होने के अहंकार में भक्ति के गीत गाते हैं उनका ये उद्यम व्यर्थ चला जाता है । महिमा के गीत असल में वह मनुष्य गाते हैं, जिनका परमात्मा के नाम से

प्यार है, जो सदा प्रभु की महिमा की वाणी का शब्द का विचार अपने हृदय में टिकाते हैं ।

गावत रहै जे सतिगुर भावै । मन तन राता नामि सुहावै ।1।

अर्थः- अगर गुरु को ठीक लगे अगर गुरु मेहर करे तो उसकी मेहर सदका उसकी शरण आया मनुष्य परमात्मा के गुण गाता रहता है । उसका मन उसका तन प्रभु के नाम में रंगा जाता है और उसका जीवन सुंदर बन जाता है ।

इकि गावहि इकि भगत करेहि । नाम न पावहि बिन असनेह । सची भगति गुर सबद पिआरि । अपना पिर राखिआ सदा उरि धारि ।2।

अर्थः- कई मनुष्य ऐसे हैं जो भक्ति के गीत गाते हैं और रास करते हैं, पर प्रभु के चरणों में प्यार के बिना उन्हें परमात्मा का नाम प्राप्त नहीं होता । उनकी ही भक्ति स्वीकार होती है, जो गुरु के शब्द के प्यार में जुड़े रहते हैं, जिन्होंने अपने प्रभु पति को सदा अपने हृदय में टिका के रखा हुआ है ।

भगति करहि मुरख आप जणावहि । नचि नचि टपहि बहुत दुख पावहि । नचिऐ टपिऐ भगति न होई । सबदि मरै भगति पाए जन सोई ।3।

अर्थः- मूर्ख लोग रास डालते हैं और अपने आप को भक्त जतलाते हैं, वे मूर्ख रास डालने के वक्त नाच नाच के कूदते हैं पर अंतरात्मे अहंकार के कारण आत्मिक आनंद की जगह दुख ही दुख पाते हैं । नाचने - कूदने से भक्ति नहीं होती । परमात्मा की भक्ति वही मनुष्य प्राप्त कर सकता है, जो गुरु के शब्द में जुड़ के स्वैभाव, अहम् से स्वयं को मार लेता है ।

भगति वछल भगति कराए सोई । सची भगति विचहु आप खोई । मेरा प्रभु साचा सभ बिधि जाणै । नानक बखसे नाम पछाणै ।4। (3-158-159)

अर्थः- पर जीवों के भी क्या बस ? भक्ति से प्यार करने वाला वह परमात्मा सब जीवों के ढंग जानता है कि ये भक्ति करते हैं या पाखण्ड । हे नानक ! जिस मनुष्य पर प्रभु कृपा करता है वह मनुष्य उसके नाम को पहचानता है नाम के साथ गहरी सांझ डाल लेता है ।

• करम होवै सतिगुरु मिलाए । सेवा सुरति सबदि चित लाए । हउमै मारि सदा सुख पाइआ माइआ मोह चुकावणिआ ।1।

अर्थः- जिस मनुष्य पर प्रभु की बख्शिश हो, उसे प्रभु गुरु से मिलाता है गुरु की मेहर से वह मनुष्य सेवा में ध्यान टिकाता है, गुरु के शब्द में चित्त जोड़ता है । इस तरह वह अपने अंदर से अहंकार को मार के माया का मोह दूर करता है, और सदैव आत्मिक आनंद प्राप्त करता है ।

हउ वारी जीउ वारी सतिगुर कै बलिहारणिआ । गुरमती परगास होआ जी अनदिन हरि गुण गावणिआ ।1। रहाउ।

अर्थः- मैं सदैव गुरु से सदके हूँ कुर्बान हूँ । गुरु की मति ले के ही मनुष्य के अंदर सही जीवन के वास्ते आत्मिक प्रकाश होता है, और मनुष्य हर रोज हर वक्त परमात्मा की महिमा करता रहता है ।

तन मन खोजे ता नाउ पाए । धावत राखे ठाकि रहाए । गुर की बाणी अनदिन गावे सहजे भगति करावणिआ ।2।

अर्थः- जब मनुष्य अपने मन को खोजता रहे अपने शरीर को खोजता रहे अर्थात, जो मनुष्य ये ध्यान रखे कि कहीं मन और ज्ञानेंद्रियां विकारों की तरफ तो नहीं पलट चलीं, तब परमात्मा का नाम प्राप्त कर

लेता है । और इस तरह विकारों की ओर दौड़ते मन को काबू कर लेता है, रोक के प्रभु चरणों में जोड़े रखता है । जो मनुष्य हर वक्त गुरु की वाणी गाता रहता है, आत्मिक अडोलता में टिक के परमात्मा की भक्ति करता रहता है ।

इस काइआ अंदरि वसत असंखा । गुरमुखि साच मिलै ता वेखा । नउ दरवाजे दसवै मुकता अनहद सबद वजावणिआ ।3।

अर्थः- बेअंत गुणों के मालिक प्रभु मनुष्य के इस शरीर के अंदर ही बसता है । गुरु के सन्मुख रह के जब मनुष्य को सदा स्थिर प्रभु का नाम प्राप्त होता है तो अपने अंदर बसते प्रभु के दर्शन करता है । तब मनुष्य नौ कपाटों की वासनाओं से ऊँचा हो के दसवें द्वार में भाव, विचार मण्डल में पहुँच के विकारों से मुक्त हो जाता है और अपने अंदर एक रस महिमा की वाणी का अभ्यास करता है ।

सचा साहिब सची नाई । गुरपरसादी मनि वसाई । अनदिन सदा रहै रंगि राता दरि सचै सोझी पावणिआ ।4।

अर्थः- मालिक प्रभु सदा कायम रहने वाला है । उसका बड़प्पन भी सदा कायम रहने वाला है । हे भाई ! गुरु की कृपा से उसे अपने मन में टिका के रख । जो मनुष्य प्रभु की महिमा मन में बसाता है वह हर समय सदा प्रभु के प्रेम में मस्त रहता है । इस तरह सदा स्थिर प्रभु की हजूरी में पहुँचा हुआ वह मनुष्य सही जीवन की समझ प्राप्त करता है ।

पाप पुंन की सार न जाणी । दूजै लागी भरमि भुलाणी । अगिआनी अंधा मग न जाणै फिरि फिरि आवण जावणिआ ।5।

अर्थः- जिस मनुष्य ने अच्छे - बुरे काम की तमीज नहीं की भाव, कोई भला काम हो या बुरा काम हो जो मनुष्य करने से संकोच नहीं करता, जिस मनुष्य की तवज्जो माया के मोह में टिकी रहती है । जो माया की भटकना में पड़ के गलत रास्ते पे पड़ा रहता है, वह माया के मोह में अंधा हुआ मनुष्य जीवन का सही रास्ता नही समझता, वह मुड़ - मुड़ के जनम - मरण के चक्कर में पड़ा रहता है ।

गुर सेवा ते सदा सुख पाइआ । हउमै मेरा ठाकि रहाइआ ।
गुर साखी मिटिआ अंधिआरा बजर कपाट खुलावणिआ ।6।

अर्थः- गुरु की बताई सेवा के द्वारा मनुष्य सदैव आत्मिक आनंद को प्राप्त करता है । अहम् और ममता को रोक के वश में रखता है । गुरु की शिक्षा पर चल के उसके अंदर से माया के मोह का अंधकार दूर हो जाता है । उसके माया के मोह के वह करड़े किवाड़ खुल जाते हैं जिन्हों में उसकी तवज्जो जकड़ी पड़ी थी ।

हउमै मारि मनि वसाइआ । गुर चरणी सदा चित लाइआ ।
गुर किरपा ते मन तन निरमल निरमल नाम धिआवणिआ ।7।

अर्थः- जिस मनुष्य ने सदा गुरु के चरणों में अपना चित्त जोड़े रखा, जिस ने अपने अंदर से अहंकार दूर करके अपने मन में गुरु का शब्द बसाए रखा, गुरु की कृपा से उसका मन पवित्र हो गया, उसका शरीर भाव, सारे ज्ञानेंद्रे पवित्र हो गए और वह पवित्र प्रभु का नाम सदैव स्मरण करता रहता है ।

जीवण मरणा सभ तुधै ताई । जिस बखसे तिस दे वडिआई
। नानक नाम धिआई सदा तूं जमण मरण सवारणिआ। 8।

(3-109-110)

अर्थः- हे प्रभु ! जीवों का जीना जीवों की मौत, सब तेरे वश में है । हे भाई ! जिस जीव पर प्रभु मेहर करता है, उसे अपने नाम की दाति दे के बडप्पन बख्शाता है । हे नानक ! सदा परमात्मा का नाम स्मरण करता रह । नाम की इनायत से जनम से ले के मौत तक सारा जीवन सुंदर बन जाता है ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नंही हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"